Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 12, Issue 01, January-June, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2024

संगीत समाकलन शिक्षण से प्राथमिक शिक्षा के छात्रों में भाषा कौशल का विकास : हिन्दी भाषा के संदर्भ में

DR. ARATI MISHRA
Assistant Professor in Education (Pedagogy of Music) Faculty of Education, Banaras Hindu University, Varanasi

सारांश: *एक भाषा सीखते समय, संगीत कक्षा में एक आरामदायक वातावरण बना सकता है जहाँ छात्र बिना किसी विघ्न के, स्वतंत्र रूप से सीख सकते हैं। यह समुदायिक और संज्ञानात्मक विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। संगीत समाकलित शिक्षण पद्धतियाँ छात्रों को बेहतर अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करती है, जो कि किसी भाषा को सीखते समय बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कला समाकलन से न केवल पढ़ने, सुनने, बोलने और लिखने जैसे कौशलों में सुधार आएगा, बल्कि छात्रों की अभिव्यक्ति भी विस्तृत और विकसित होगी।*

कुंजी शब्द: *संगीत, समाकलन शिक्षण, प्राथमिक शिक्षा, भाषा कौशल।*

भूमिका

बाल्यावस्था से वयस्कता तक मानव मस्तिष्क एक लचीली अवस्था में होता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य है संगीत प्रशिक्षण के माध्यम से भाषा कौशल के विकास पर संभावित प्रभावों का अनुसंधान करना। मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर इस प्रकार के प्रशिक्षणों का बहुमूल्य प्रभाव होता है। यह प्रभाव संगीत के मंचन एवं प्रदर्शन से उत्पन्न होने वाले प्रभाव से परे है। इन प्रभावों तथा परिणामों का एक प्रमुख अनुप्रयोग बच्चों की शिक्षा के लिए रणनीति तैयार करने में है। साथ ही, बढ़ती उम्र में मस्तिष्क की सेहत के अनुरक्षण के लिए भी इनका अनुप्रयोग किया जा सकता है[1]। जैसे कि, एक वाद्ययंत्र में महारत हासिल करने से, मानव मस्तिष्क की मौखिक भाषा को संसाधित करने की क्षमता में सुधार आता है। इन निष्कर्षों के आधार पर, हम प्राथमिक शिक्षा में गणित और अन्य विषयों के समान संगीत को भी पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने के प्रयास कर सकते हैं[2]।

सर्वप्रथम, हम देखेंगे कि संगीत प्रशिक्षण के सकारात्मक प्रभावों के अध्ययन के लिए हिन्दी भाषा एक उपयुक्त माध्यम क्यों है। इसके पश्चात, हम हिन्दी भाषा सीखने और उसकी समझ के आकलन के लिए, कला समाकलित शिक्षण के दृष्टिकोण से नृत्य और नाटक के उपयोग को देखेंगे। अंततः, हम पाठन कौशल के विकास पर कक्षा में संगीत समाकलन के प्रभाव, और शिक्षकों द्वारा कक्षा और शिक्षा में संगीत समाकलन करने की विधियों पर चर्चा करेंगे।

हिन्दी भाषा

हिन्दी न केवल हमारे देश की एक प्रमुख प्राथमिक भाषा है, अपितु आज यह दुनिया भर में सबसे अधिक बोली जाने और पहचानी जाने वाली भाषाओं में से एक है। भारत में, हिन्दी अक्सर छात्रों को एक प्रमुख या अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाई जाती है। स्कूली पाठ्यक्रम में, हिन्दी भाषा का अध्ययन व्यापक रूप से हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा में विभाजित है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर, हिन्दी को एक भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। माध्यमिक स्तर पर, हिन्दी साहित्य को गद्य, कविता और नाटक जैसे विभिन्न शैलियों में पढ़ाया जाता है। एक भाषा के रूप में होने वाले अध्ययन के समानांतर हिन्दी साहित्य की इन विभिन्न शैलियों में होने वाले अध्ययन से, छात्रों की शब्दावली समृद्धि होती है और साथ ही उन्हें गद्य, पद्य और नाटक में अनुप्रयोगों के उदाहरण भी प्राप्त होते हैं।

कला समाकलित शिक्षण

कला समाकलित शिक्षण, आधुनिक कक्षाओं में कुछ ऐसे परिवर्तन ला रही है जिनकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है। कला समाकलित शिक्षण से हमारा तात्पर्य है, शिक्षण और मूल्यांकन की प्रक्रिया में संगीत, नृत्य और नाटक को समाकलित करना। और जैसा कि हम आगे देखेंगे, किसी भी भाषा को सीखने में कला समाकलित शिक्षण एक अत्यंत प्रभावी पद्धति बन सकती है।

कला समाकलित शिक्षण और मूल्यांकन पद्धतियों से शिक्षकों को बहुत लाभ होता है क्योंकि यह उन्हें पारंपरिक विधियों से परे गमन करने का अवसर प्रदान करती हैं। पारंपरिक विधियों से हमारा तात्पर्य है शिक्षण और मूल्यांकन की मौखिक तथा कागज-पेंसिल-आधारित विधियों से। पारंपरिक विधियों से कला आधारित मूल्यांकन विधियों की ओर गमन करने से, शिक्षकों को मूल्यांकन हेतु अधिक व्यापक प्रणालियाँ विकसित करने में सहायता प्राप्त हो सकती है। यह विधियाँ न केवल हिन्दी भाषा के विषय से संबंधित मूल्यांकन में सहायक होंगी, अपितु छात्रों के सामाजिक-भावनात्मक बौद्धिक विकास को भी माप सकेंगी। स्पष्टतः सामाजिक-भावनात्मक बौद्धिक विकास, किसी भाषा को पढ़ाने के प्राथमिक उद्देश्यों में से एक है - इससे मात्र नये व्याकरण के नियमों का जानने का मार्ग ही नहीं खुलता, अपितु यह शिक्षार्थी को उस संस्कृति और समाज से भी परिचित कराते हैं जिसने उस भाषा के ऐतिहासिक विकास को आकार दिया।

यदि कला समाकलित शिक्षण की प्रणाली का उचित रूप से प्रयोग किया जाए, तो सीखने और सीखने की प्रक्रिया पूर्णतः परिवर्तित हो सकती है। छात्रों और शिक्षकों को इस प्रणाली से प्राप्त होने वाले लाभ कुछ इस प्रकार हैं,

- इस दृष्टिकोण से सिखायी जा रही भाषा में छात्रों को अभिव्यक्त की रचनात्मक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यह पेपर-पेंसिल प्रारूप में व्याकरण-आधारित प्रश्नों का उत्तर देने, या वाचन कौशल के आकलन हेतु मौखिक अभ्यास करने से उत्पन्न हुई सीमाओं को हटा देता है। छात्रों को अपने आकलन हेतु एक ऐसा माध्यम प्राप्त होता है, जिसकी पहुँच उनको अपनी कक्षा में नियमित रूप से नहीं होती। यह भाषा को बेहतर रूप से सीखने के साथ-साथ संज्ञानात्मक विकास में भी सहायक है।[3]
- शिक्षक इस दृष्टिकोण की सहायता से एक भाषा को सीखने के प्रति छात्रों के उत्साह को खोज सकते हैं। ऐसा इसलिए है, क्योंकि इस दृष्टिकोण के अनावरण के साथ ही, शिक्षक पाठ्यक्रम को अधिक रोचक बना सकते हैं। और इस प्रकार से विकसित पाठ्यक्रम छात्रों के ध्यान और बुद्धिमत्ता का बेहतर अनुमान लगाते हैं। साथ ही, शिक्षकों को छात्रों की रचनात्मकता का लाभ उठाने का अवसर भी प्राप्त होता है।

नृत्य और नाटक समाकलित शिक्षण

हिन्दी भाषा सीखने की प्रगति का आकलन तथा शिक्षण पद्धति में नृत्य और नाटक का समाकलन, दैनिक जीवन की स्थितियों के प्रसंगों को पठान में लाकर किया जा सकता है। ऐसी कार्यप्रणाली की सफलता के लिए शिक्षक और छात्रों, दोनों को इच्छा और उत्साह की आवश्यकता होगी। यहाँ, हम हिन्दी भाषा को सिखाने में नृत्य और नाटक समाकलन करने के विभिन्न लाभों को देखेंगे,

- नृत्य और नाटक छात्रों का ध्यान आकर्षित करते हैं। जीवंत अनुभवों का आभास कराने की क्षमता के कारण, नाटक और नृत्य पाठ की अवधि में अधिक सफलता से छात्रों को ध्यान केंद्रित रखते हैं। छात्रों की सक्रिय सहभागिता से, शिक्षक पाठ के 50% उद्देश्यों को आसानी से पूरा कर सकते हैं।
- नाटक आधारित निर्देश और मूल्यांकन विधियों से ऐसे छात्रों को प्रेरित किया जा सकता है, जिनकी ध्यान देने की क्षमता चंचल प्रकृति की होती है।
- नाटक आधारित निर्देश और मूल्यांकन विधियों से छात्रों में सार्वजनिक भाषण का कौशल भी विकसित होता है - यह भाषा सीखने में अत्यंत लाभकारी भी होता है और इससे छात्रों की स्मरण शक्ति में भी वृद्धि होती है।
- यह कक्षा में सामुदायिक सद्भाव को भी प्रोत्साहित करता है। सीखी जा रही भाषा में, छात्रों को लघु कृत्यों के रूप में अपनी समझ को व्यक्त करने का अवसर मिलता है, जिससे छात्रों के बीच संचार स्थापित होता है।
- नृत्य और नाटक समाकलित शिक्षण पद्धति कक्षा के वातावरण को परिवर्तित कर उसे समावेशी और मनोरंजक बना देती है।

- इस पद्धति के प्रभावी अनुप्रयोग से छात्रों के संज्ञानात्मक और बौद्धिक कौशल में सुधार आता है। यह उन्हें भावनात्मक रूप से तो विकसित करता ही है, साथ ही उनमें आत्मविश्वास भी उत्पन्न करता है।

उपरोक्त लिखित लाभ किसी भी भाषा सीखने की अवधि में अत्यंत प्रभावी होते हैं। जहाँ पारंपरिक विधियाँ प्रायः छात्रों में इन कौशलों को विकसित करने में विफल होती हैं, नृत्य और नाटक समाकलित शिक्षण पद्धति कौशल विकसित करने के साथ साथ भाषा सीखने को अधिक प्रभावी और मनोरंजक भी बनाती है।

कक्षाओं में संगीत समाकलित शिक्षा

एक शिक्षक को सामान्य मानकों के अनुरूप विधियों के अनुप्रयोग से पाठ्यक्रम पढ़ाना आवश्यक होता है। अक्सर, इन आवश्यकताओं के अनुपालन के प्रयास में शिक्षक और छात्रों दोनों के लिए शिक्षण प्रक्रिया प्रेरणादायक नहीं रह पाती। और जैसा कि हमने अब तक देखा, कला समाकलित पद्धति शिक्षण प्रक्रिया को अधिक ग्रहणशील और प्रभावी बनाती है। अपनी निजी शिक्षण पद्धति में किसी भी कला-संबंधित गतिविधि का समावेश करना सदैव संभव होता है। यह समाकलन शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रेरणादायक बनाता है जिससे बेहतर शिक्षण योजना का निर्माण होता है। यह प्रेरणा किसी गीत, लय, कविता या कथा से आ सकती है।

प्राथमिक शिक्षा में हिन्दी वर्णमाला सीखना एक ऐसा अनुप्रयोग है जिससे लगभग सभी परिचित होंगे। हम सभी को अपने बचपन का काल स्मरण होगा, जब हमारे शिक्षक किस लय या संगीत की धुन पर आधारित कविताएँ और पहाड़े सिखाते थे। यह शिक्षण प्रणाली कई वर्षों से निरंतर ऐसे ही चली आ रही है। इन विधियों से शिक्षण अधिक आकर्षक बनता है, और छात्रों को पढ़ाये गये विषय को स्मरण रखने में बहुत प्रभावी सिद्ध हुई है। माध्यमिक और उच्च कक्षाओं में भी, छात्रों द्वारा विभिन्न रासायनिक समीकरणों और गणितीय सूत्रों को पढ़ने और स्मरण रखने के लिए किसी लयबद्ध वाक्य, मुहावरे या उक्ति का उपयोग किया जाता है।

इतिहास साक्षी है, कि लोकप्रिय गीतों का शिक्षकों के साथ एक संबंध रहा है। यह लोक गीत और इनके विषय दैनिक जीवन के सामान्य अनुभवों से जुड़े हुए थे। आज भी अधिकांश युवाओं को संगीत और अभिव्यक्ति की अन्य सांस्कृतिक स्वरूपों में गहरी रुचि है - इस रुचि और अभिव्यक्ति को पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में स्थान मिलना कठिन है। यानी कि, गीत और लय को एक प्रभावी शिक्षण उपकरण के रूप में उपगोग किया जा सकता है। वाद्य ध्वनियाँ चित्त को प्रसन्न करती है। इससे, छात्रों में शिक्षण से संबंधित किसी भी प्रकार की घबराहट या दुविधा से निपटने में सहायता मिल सकती है।

संगीत को शिक्षण के प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम में प्रयुक्त किया जाना चाहिए। इस कार्य में प्रौद्योगिकी सहायक हो सकती है। संगीत समाकलित शिक्षण के अनुप्रयोग से, हिन्दी भाषा के पाठ के समय छात्र न केवल भाषा को बेहतर ढंग से सीख सकेंगे, बल्कि उन्हें उस भाषा के मूल वक्ताओं के जीवन में एक सांस्कृतिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का भी अवसर मिलेगा। संगीत समाकलन शिक्षण पद्धति के अधिक अनुप्रयोग, और इन अनुप्रयोगों के साथ छात्रों के बढ़ते अनुभव के साथ, छात्रों की प्रेरणा निश्चित रूप से बढ़ेगी - कल्पना करें की छात्र सीखी हुई नयी शब्दावली को गीतों के रूप में अभिव्यक्त कर रहे हों तो उनका अनुभव कितना प्रेरणादायक होगा।

यहाँ यह समझना भी लाभदायक होगा, कि किसी भाषा के पाठन कैशल का संगीत से गहरा संबंध है। इस सिद्धांत का समर्थन करते कुछ उदाहरण यहाँ सूचीबद्ध हैं[4],

- लय की समझ रखने वाले छात्रों की पाठन क्षमता बेहतर होने की संभावना अधिक होती है।
- संगीत से छात्रों में पैटर्न और अनुक्रम पहचानने की क्षमता उत्पन्न होती है।
- जीवन के प्रारंभिक वर्षों में संगीत के संपर्क में आने पर छात्रों की रचनात्मकता, समन्वय और स्मृति विकसित होती है।
- प्रारंभिक वर्षों में संगीत का अनुभव छात्रों में सामाजिक अंतः क्रिया और आत्म-सम्मान को बढ़ावा देता है।

- ऐसे खेल जिनमें गायन शामिल होता है, वह बच्चों को आपसी मेलजोल बढ़ाने में सहायक होते हैं।
- संगीत उच्च स्तरीय मेधा को प्रबल बनाता है।

कक्षाओं में संगीत का समाकलन

मूलतः, शिक्षण में कला के सहायक अनुप्रयोगों को तीन विधाओं के रूप में देखा जा सकता है - गीत, नृत्य और नाटक। शिक्षक इन तीनों में से कोई भी विकल्प चुन सकते हैं तथा शिक्षण और मूल्यांकन कार्यप्रणाली में इस विधा को समाकलित कर सकते हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार भाषा कौशल और संगीत विभिन्न स्तरों पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं[5]।

पारंपरिक शिक्षण विधियाँ एकतरफा संचार पर आधारित होती हैं। हालाँकि, समय के साथ यह दोतरफा संचार में परिवर्तित हो गया है, और वर्तमान में, इस प्रक्रिया में समाज भी एक प्रमुख सहभागी के रूप में उभरा है। यहाँ हम देखेंगे कि हिन्दी भाषा के शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए संगीत की तीनों विधाओं (अर्थात गीत, नृत्य और नाटक) का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

- कविताएँ पढ़ाते समय हस्त मुद्राएँ और चेहरे के विभिन्न भाव छात्रों का ध्यान आकर्षित करते हैं। छात्रों को इसका अनुकरण करने के लिए कहा जा सकता है - जिससे उनमें संकोच भी घटता है।
- धुन और लय में कविताएँ पढ़ने से, छात्रों को इन्हें बेहतर रूप से समझने में सहायता प्राप्त होती है। इस प्रकार से इन्हें याद रखना भी सरल होता है।
- कहानियाँ सुनाते समय, कथानक की नाटकीयता और सीख को सामने लाने वाले विस्मयादिबोधकों का उपयोग भी महत्वपूर्ण है। छात्रों को अपनी निजी व्याख्याएँ प्रदान करने के लिए भी प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- स्वर या आवाज़ पर नियंत्रण गायन का एक आवश्यक तत्व है। गायन हमें हमें अपनी आवाज को नियंत्रित करना और उसके प्रवाह को सहज बनाना सिखाता है। किसी भी रचना को सिखाने के लिए गायन का उपयोग करते समय, एक शिक्षक का स्वर और आवाज पर नियंत्रण यह तय कर सकता है कि उस सत्र में कितने छात्र कितना अधिक ध्यान देंगे। ध्वनि में ऊर्जा और नाटकीयता से छात्र अधिक चौकन्ने रहते हैं।
- छात्रों से किसी कथानक के विभिन्न पात्रों का नाटकीय रूपांतरण करवाने से, छात्रों में उस कथा की समझ प्रभावित होती है। इन क्रियाकलापों से न केवल पाठ की समझ में सुधार आता है, बल्कि छात्रों में, शब्दों, वाक्यांश और अभिव्यक्तियों से संबंधित शब्दावली की समझ भी अधिक गहरी होती है।
- ऑडियो-विज़ुअल तकनीकों से आगे और भी समाकलन किया जा सकता है, जिसके अन्तर्गत छात्रों को कविताओं के कार्टून, वीडियो दिखाए जाते हैं। उन्हें पाठ्यक्रम की किसी कहानी या उपन्यास पर आधारित फिल्मों या नाटकों में भी दिखाया जा सकता है।

संगीत दूरियों को पाट कर कई सेतुओं का निर्माण कर सकता सकता है। कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष मिलता है, कि गहन संगीत प्रशिक्षण से बच्चों के भाषाविज्ञान कौशल में वृद्धि होती है। हालाँकि ऐसा प्रशिक्षण सभी छात्रों के लिए उपलब्ध नहीं होता है[6]।

प्रागैतिहासिक काल से ही संगीत मानव अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। हमारा मनोविज्ञान संगीत के प्रति बहुत गहन रूप से प्रतिक्रिया करता हैं। उपरोक्त विधियों के उपयोग से हिन्दी भाषा के शिक्षण को, शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए बहुत प्रभावी बनाया जा सकता है। कई व्यवहारिक अध्ययनों पर आधारित परिणाम यही दर्शाते हैं कि संगीत के अनुप्रयोग से प्लेस्कूल के छात्रों का भाषाई कौशल बढ़ता है। आंकड़ों से यह भी पता चलता है, कि प्लेस्कूल में साप्ताहिक संगीत क्रियाकलापों में भाग लेने वाले 5-6 वर्ष के बच्चों में ध्वनि

प्रसंस्करण कौशल और शब्दावली विकास में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसी प्रकार संगीत तथा कला, भाषाई क्षमताओं एवं कौशलों के विकास में निरंतर में योगदान करते रहे हैं।

निष्कर्ष

एक भाषा सीखते समय, संगीत कक्षा में एक आरामदायक वातावरण बना सकता है जहाँ छात्र बिना किसी विघ्न के, स्वतंत्र रूप से सीख सकते हैं। यह समुदायिक और संज्ञानात्मक विकास को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। संगीत समाकलित शिक्षण पद्धतियाँ छात्रों को बेहतर अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करती है, जो कि किसी भाषा को सीखते समय बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। कला समाकलन से न केवल पढ़ने, सुनने, बोलने और लिखने जैसे कौशलों में सुधार आएगा, बल्कि छात्रों की अभिव्यक्ति भी विस्तृत और विकसित होगी।

संदर्भ

1. Baycrest Center For Geriatric Care. (2002). Study to look at possible benefits of musical training on brain function in young and old. Science Daily. Retrieved April 19, 2013, from
2. http://www.sciencedaily.com/releases/2002/01/020110074219.htm
3. Musical training helps language processing, studies sh
4. https://news.stanford.edu› november16 › music-111605
5. Songs for Teaching: Using Music to Promote Learning, Stein Gari
6. http://www.songsforteaching.com/teachingtips/benefitsofmusicwithyoungchildren.html.
7. Music and the child, Natalie sarrazzin Chapter 12 Music Integration
8. Relating Language and Music Skills in Young Children by CohrdesC 2016
9. https://www.frontiersin.org› fpsyg.2016.01616
10. Music playschool enhances children's linguistic skills by T Linnavalli·2018- Nature
11. https://www.nature.com› scientific reports